रामायणकालीन नारी

मनोज कुमार द्विवेदी

शोध छात्र–संस्कृत विभाग
म0 गाँ0 का0 विद्यापीठ
वाराणसी उ0प्र0।

किसी भी देश काल एवं समाज के मूल्यांकन का सर्वोत्तम आधार उसमें नारी दशा का अध्ययन करना है। समाज में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक आधार रखता है। भारतीय समाज में स्त्री को देवी शक्ति के रूप में देखा जाता है किन्तु इनकी भी स्थिति में उतार–चढ़ाव दृष्टिगत होता है। भारतीय नीतिशास्त्र के इतिहास मे जब नर एवं नारी पुत्रोत्पत्ति करते हैं, तब परिवार पूर्णता की दिशा में गतिशील माना जाता है। वैदिक काल से नर–नारी की आकांक्षा, सहकार, सौख्य और स्नेह की रही है। भारतीय पुराण तथा स्मृतिशास्त्रों में नारी धर्म की मीमांसा है। भारतीय सामाजिक जीवन को समर्पित नारी वाक्संयम, चक्षुसंयम तथा कर्मसंयम से निरन्तर प्लावित करती रही है। स्मृतिकार मनु ने– **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता,**[1] जैसे वाक्यों से नारी के महात्म्य को बताया है।

वाल्मीकि रामायण में नारी के पावन और प्रेरक चरित्र का उदार तथा उत्कृष्ट वर्णन हुआ है। रामायण में जहाँ एक ओर सीता, पार्वती, कौशल्या, सुनयना, अनुसूया, और मन्दोदरी ने अपने चरित्र से सम्पूर्ण जनमानस को प्रभावित किया वहीं दूसरी ओर मंथरा, कैकेयी, सूर्पणखा आदि नारियों ने नारी के स्वरूप को कलंकित भी किया है। इस प्रकार नारी के देवी और कुलटा दोंनों स्वरूप का वर्णन रामायण में हुआ है।

रामायणकालीन नारी कहीं पत्नी के रूप में पति के सुख–दुःख की सहभागिनी, पातिव्रत्य धर्म में संलग्न एवं धार्मिक कृत्यों में पति की सहचारिणी थी, तो कहीं माँ के रूप में अपने दुःखों की चिन्ता न करते हुए सर्वदा सन्तान के हित साधन में तत्पर रहती थी। वहीं पुत्री के रूप में माता–पिता के आनन्द को बढ़ाने वाली थी। समाज में स्त्री के प्रति विशेष सम्मान भाव रहता था। उन्हें पुरूषों के समान ही समाज का स्थायी और गौरवशाली अंग समझा जाता था।

रामायणकालीन समाज में पुत्री के जन्म को भार नहीं समझा जाता था। पुत्री के जन्म पर भी माता–पिता को अत्यन्त प्रसन्नता होती थी। पुत्री के रूप में सीता को पाकर राजा जनक अत्यन्त प्रसन्न हुए थे।[2] किन्तु कन्या के विवाह के सम्बन्ध में वर–पक्ष की अपेक्षा कन्यापक्ष की स्थिति निम्न थी। रामायण में कहा गया है कि संसार में कन्या के पिता को वह पृथ्वी पर इन्द्र के ही समान क्यों न हो, वरपक्ष के लोगों से प्रायः अपमान उठाना पड़ता है।[3] पिता का यह परम कर्तव्य माना जाता था कि वह अपनी पुत्री के योग्य वर के हाथों में समर्पित

Scanned with CamScanner

करे। जब तक पिता अपनी पुत्री का विवाह योग्य वर के साथ नहीं कर देता था उसे शान्ति नहीं मिलती थी।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में पत्नी को अर्धांगिनी माना गया है। वह पुरूष की सहचरी ही नहीं अपितु सहधर्मिणी भी है। रामायण में पति–पत्नी सम्बन्ध को धर्म–सम्बन्ध कहा गया है।[4]

रामायणकाल में नारी पत्नी के रूप में धर्म, अर्थ एवं काम रूप त्रिवर्ग की सिद्धि में सहायक मानी जाती थी। वह पति के वशीभूत या अनुकूल रहकर अतिथि–सत्कार आदि धर्म के पालन में सहायक होती थी, प्रेयसी रूप में काम का साधन बनती थी और पुत्रवती होकर उत्तमलोक की प्राप्ति रूप अर्थ की साधिका होती थी–

''धर्मार्थकामाः खलु जीवलोके समीक्षिता धर्मफलोदयेषु।
ये यत्र सर्वे स्युरसंशयं मे भार्येव वश्याभिमता सपुत्रा।।''[5]

रामायण में नारी पति के प्रति समर्पित, आश्रित एवं सहयोगिनी के रूप में दिखाई पड़ती है। रामायण में कहा गया है कि ''पिता, पुत्र, माता तथा उसकी सखियाँ यहाँ तक कि उसका अपना शरीर भी उसका सच्चा सहायक नहीं है। नारियों के लिये लोक तथा परलोक में एकमात्र पति ही सदा आश्रय देने वाला होता है।''[6] पिता, माता, भाई, पुत्र और पुत्रवधु– ये सब पुण्यादि कर्मों का फल भोगते हुये अपने–अपने शुभाशुभ कर्म के अनुसार जीवन निर्वाह करते हैं केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है।[7] पत्नी के लिये पति ही सबसे बड़ा देवता कहा गया है–

''शुद्धात्मन् प्रेमभावाद्धि भविष्यामि विकल्मषा। भर्तारमनुगच्छन्ती भर्ता हि परदैवतम्।।''[8]

रामायणकालीन नारी के मातृ–स्वरूप को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। माँ बनने पर ही नारी पूर्ण होती है। नारी के लिये सबसे बड़ा सुख मातृत्व सुख माना गया है। श्रीराम के बनगमन के समय माता कौशल्या ने श्रीराम से कहा था कि– ''पुत्र राम! तुम्हारे बिना मुझे इस जीवन से क्या लाभ है? इन स्वजनों से, देवता तथा पितरों की पूजा तथा अमृत से भी क्या प्रयोजन है? तुम दो घड़ी भी मेरे पास रहो तो वही मेरे लिये सम्पूर्ण संसार के राज्य से भी बढ़कर सुख देने वाला है।[9]

रामायण काल में नारियाँ सुशिक्षित, धर्मपरायण, राजनीति में कुशल एवं विदुषी थी। आर्येतर नारियाँ(बानर, राक्षस) भी विदुषी थी। सुग्रीव का यह कथन द्रष्टब्य है– सुषेण की पुत्री तारा, सूक्ष्म विषयों का निर्णय करने तथा नाना उत्पातों के चिन्हों को समझने में निपुण थी। उसकी सम्मति का विपरीत परिणाम संभव नहीं। तारा ने कुपित लक्ष्मण को पौराणिक दृष्टान्त देकर शान्त किया और बाद में सीता के अनुसंधान की योजना बनायी। सुग्रीव के राज्य का संचालन एवं नीति निर्धारण तारा ही करती थी। रामायणकालीन नारी धर्मपरायण थी। उसका दैनिक जीवन कठोर धार्मिक बन्धनों में बन्ध था। पति–सेवा उनका परमधर्म था। उन्हें विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान करने होते थे। गर्भवती महिला गर्भस्य शिशु के अच्छे संस्कारों के लिये शास्त्र प्रवचन सुनती थी। पुलस्त्य मुनि की पत्नी गर्भावस्था में वेद–पाठ श्रवण करती रहती थी, इसी कारण उनका पुत्र विश्रवा कहलाता है। धार्मिक कृत्यों में पत्नी अपने पति की सहचारिणी थी।

Scanned with CamScanner

बिना पत्नी के किया पति का कोई भी धार्मिक अनुष्ठान सफल नहीं होता था। राम के राज्याभिषेक के समय कौशल्या को मंत्रों सहित यज्ञ में आहुति देते हुये दिखाया है। रामायण काल में स्वयंवर प्रथा, अन्तर्जातीय विवाह आदि का भी बोध होता था। उत्तरकाण्ड में अन्तर्जातीय विवाह की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का संकेत मिलता है। क्षत्रिय ययाति और ब्राह्मण देवयानी का विवाह सम्बन्ध इस प्रवृत्ति का उदाहरण है।[10]

रामायण काल में विवाह सम्बन्धों में ज्योतिष और सामुद्रिकशास्त्र का विचार आवश्यक था। साथ ही कन्या एवं वर के लक्षणों का भी विचार किया गया जाता था। रामायण में प्राप्त कुछ वर्णनों से ज्ञात होता है कि उस युग में आर्य और अनार्य दोनों वर्गों की स्त्रियाँ पर्दा करती थी। सीता बनगमन का प्रसंग इसका प्रमाण है। राक्षसों में भी पर्दा प्रथा थी। रावण की मृत्यु पर मन्दोदरी युद्ध स्थल में विलाप करती हुई कहती है– ''स्वामी! मैं पर्दा छोड़कर नगर द्वार से पैदल चलकर प्रासाद से बाहर आयी हूँ। मुझे देखकर आप क्रुद्ध क्यों नहीं होते हैं।''[11] इससे सिद्ध होता है कि उस काल में स्त्रियाँ अवगुण्ठन तो करती थीं। परन्तु उनके भ्रमण पर प्रतिबन्ध नहीं था।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि रामायणकाल में वर्णित कौशल्या, सीता, अनुसूया मन्दोदरी का उदात्त चरित्र आज की नारी को बहुत कुछ सिखा सकता है। आज की कुछ नारी पढ़–लिखकर सुन्दर वस्त्र पहनकर वाह्यरूप से सभ्य तो हो गयी किन्तु शालीनता पवित्रता त्याग आदि गुणों से रहित होती जा रही हैं, जिससे उनके जीवन तथा उनके परिवार में सुख–शान्ति का अभाव सा होता दिखाई दे रहा है। नारियों के प्रति सम्मान की तो रामायण में पराकाष्ठा ही दिखाई देती है। एक जटायु नामक पक्षी भी स्त्री का अपमान होते हुये नहीं देख सकता था उसने भी वृद्ध होते हुये अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुये परम शक्तिशाली रावण के साथ युद्ध किया। यह बताता है कि हमें स्त्री के सम्मान की रक्षा करनी चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. मनुस्मृति 3/56
2. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–118, श्लोक–31–32, गीताप्रेस गोरखपुर।
3. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–118, श्लोक–35, गीताप्रेस गोरखपुर।
4. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, बालकाण्ड, सर्ग–72, श्लोक–3, गीताप्रेस गोरखपुर।
5. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–21, श्लोक–57, गीताप्रेस गोरखपुर।
6. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–27, श्लोक–6, गीताप्रेस गोरखपुर।
7. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–27, श्लोक–4–5, गीताप्रेस गोरखपुर।
8. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–29, श्लोक–16, गीताप्रेस गोरखपुर।
9. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग–21, श्लोक–53, गीताप्रेस गोरखपुर।
10. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग–58, गीताप्रेस गोरखपुर।
11. श्रीमद्वाल्मीकिकृत रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग–111, श्लोक–61, गीताप्रेस गोरखपुर।

Scanned with CamScanner